1857 के विद्रोह के कारण

डॉ० रिज़वाना खातुन
इतिहास विभाग
बी०आर०ए०बी०यू०
मुजफ्फरपुर

1857 के विद्रोह के कई महत्वपूर्ण कारण थे जिनकी वजह से यह घटना घटी। कोई भी क्रांति सदियों से नहीं होती, उसके पीछे कोई न कोई कारण जरूर रहता है। जब किसी व्यक्ति या जनता की सहन शक्ति समाप्त हो जाती है और दबा हुआ असंतोष ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ती है तब उसे क्रांति अथवा विद्रोह की संज्ञा देते है। इसी प्रकार विद्रोह तभी होता है जब अन्याय अपनी सीमा पार कर जाता है, जब जनता का धैर्य टूट जाता है, जब अपने संकट को दूर करने का कोई मार्ग जनता को नहीं दिखता है तब वह विद्रोह का झंडा खड़ा करती है। भारत में 1857 के विद्रोह के पीछे भी यही कारण था जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कारण था कारतूस वाली घटना जो सैनिकों द्वारा हुआ था। क्योंकि सैनिकों को लग रहा था कि अंग्रेज हमारे धर्म को नष्ट करना चाहते है, इसलिए यह विद्रोह सैनिकों द्वारा हुआ। विद्रोह कभी किसी एक कारण से नहीं होता हैं, उसके पीछे अनेक कारण होते हैं, अनेक चिंगारियों के मिलने से ही आग की लपटे उठ सकती है।

इस प्रकार सिपाही विद्रोह के कई कारण थे जिसमें डलहौजी की उग्र सम्राज्यवादी नीति ने भारतीय शासकों को कुचल दिया। लॉर्ड डलहौजी हड़प नीति को अपना कर एक–एक करके सभी रियासतों को हड़पता जा रहा था। इतना ही नहीं लॉर्ड डलहौजी ने ऐसे रियासतों को, जिनके शासकों को पुत्र नहीं था, गोद लेने की स्वीकृति प्रदान नहीं की और उनके रियासतों को जबरन ब्रिटिश सम्राज्य में मिला लिया। इस सिद्धांन्त के आधार पर उसने झाँसी, जौनपुर, संम्भलपुर, उदयपुर, सतारा और नागपुर रियासतों को कंपनी ने ब्रिटिश सम्राज्य में मिला लिया।

इस प्रकार अवध के नवाब और मुगल सम्राज्य के अधिकार छीने जाने के कारण मुसलमान बहुत नाराज हो गये क्योंकि मुगल सम्राट को अभी भी भारत का सरताज समझा जाता था। फिर नाना साहब को पेंशन नहीं दिये जाने के कारण हिन्दू असंतुष्ट थे। डलहौजी की नीति के अनुसार अनेक छोटे राज्य जैसे सतारा, झाँसी, उदयपुर आदि के पुत्रों को पेंशन से वंचित कर दिया गया।

भारतीय नरेशों की रियासत जब्त होने के कारण उच्च एवं साधारण वर्ग के लोग तथा सैनिक बेकार हो गये। इस कारण जब विद्रोह हुआ तो ये सभी लोग इसमें शामिल हो गये। इस प्रकार राजनैतिक असंतोष क्रांति का प्रमुख कारण बना।

ब्रिटिश सरकार ने बहुत सी जमीनदारियाँ जब्त कर ली थी जिसके कारण उस राज्य के सैनिकों को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। फिर अंग्रेजों ने भारतीय वस्त्र उद्योग को कुचलने के लिए भारतीय कपड़ों, जैसे सूती–मलमल, जिनका निर्यात होता था, पर कर लगा दिया। फलतः भारतीय वस्त्र उद्योग में लगे लाखों लोग भीखमंगे हो गये। फिर किसानों पर बहुत अधिक अत्याचार किये गए। भूमि कर बढ़ा दिया गया और समय पर भूमि कर नहीं चुकाने पर किसानों की भूमि की निलामी कर दी जाती थी जिस कारण किसान पिस गये।

उत्तरी भारत के एक बड़े भाग में यह महाविद्रोह जन–विद्रोह बन गया। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक असंतोष के कई कारण थे जिसमें प्रमुख कारण यह था कि नई लगान व्यवस्था में सरकार की उत्पीड़न की निति दिखाई देती थी। यह दो रूपों में दिखाई पड़ी। पहली तो भूमि की क्षमता से अधिक लगान की दर और दूसरी भूमि को निजी संपत्ति बनाने से इस पर अधिकार के हस्तांतरण की सुविधा। जमीनदारों और किसानों के लिए नई व्यवस्था के अन्तर्गत नियत लगान की अदायगी कर पाना कठिन हो रहा था। उत्तरी दोआब जैसे उपजाऊ क्षेत्र में लगान की दर इतनी अधिक थी कि इसका भुगतान नहीं हो सका। मथुरा–आगरा क्षेत्र में लगान की रकम कम नियत की गई थी। परंतु यहाँ सिंचाई के साधनों के अभाव में उपज इतनी कम थी कि इसका भी भुगतान कठिन था।

ऐसे खुदकश्त किसानों पर जिनके पास छोटे–छोटे खेत थे, अधिक दबाव पड़ा। सन् 1846 में बॉर्ड ऑफ रेवेन्यू ने यह कहा था कि चार जिलों – अलीगढ़, मैनपुरी, मथुरा और बाँदा में जहाँ लगान न जमा करवाने के कारण भूमि की नीलामी की गई थी, यह पाया गया कि इसका कारण लगान की अधिकता थी। 1857 तक मैनपुरी के कुछ भाग को छोड़कर किसी और जिले में स्थिति को सुधारने का कोई प्रयास नहीं किया गया। यह देखते हुए यह कोई हैरानी की बात नहीं कि इन जिलों में ग्रामीण इलाकों में विद्रोह ने उग्र रूप धारण किया। भूमि को निजी सम्पत्ति बना देना भी असंतोष का कारण बना। इससे भूमि खरीदना–बेचना आसान हो गया। लगान की ऐसी दर जिसकी आदयगी करना कठिन था और भूमि के हस्तांतरण की व्यवस्था का मिला–जुला परिणाम यह हुआ कि छोटे–छोटे जमीन्दारों को बेदखल करना आसान हो गया। सन् 1853 में केवल उत्तर पश्चिमी प्रांत में लगान की रकम की आदयगी न होने के कारण 11 लाख एकड़ भूमि की नीलामी की गई। इसी प्रकार 1856–57 में अवध में संक्षिप्त बंदोबस्त किया गया। जिसके अंतर्गत भी बहुत से जमीन्दारों को बेदखल किया गया।

साहूकारों ने सरकार की नीतियों का भरपुर लाभ उठाया और जमीनो के मालिक बन गए। इन साहूकारों को आर्थिक लाभ तो हुए परन्तु वे गांव में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर पाए। लोगों की सहनुभूति भूमि के वंशानुगत मालिकों के साथ बनी रही और उनकी दुर्दशा के लिए वे सरकार को ही उत्तरदायी ठहराते रहे। कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि जमीन्दार किसानों का उत्पीडन नहीं करते थे या यह कि उनके आर्थिक हितों में एकरूपता कुलीन लोग अर्थव्यवस्था और आपसी संबंधो के आलोक में संचालित करते थे। ऐसे में तनाव का होना असंभव नहीं था परन्तु इस समय सरकार के नीतियों के सीधे प्रभावों के कारण उनके संबंधों में पारस्परिकता आ गई और विदेशी सरकार ही शत्रु पक्ष दिखाई देने लगी थी। बड़े–बड़े जमीन्दारो और तल्लुकेदारों ने विरोधी रवैया को अपनाया। इसका कारण था कि उनके लिए भी ब्रिटिश लगान बंदोबस्त घातक सिद्ध हो रहा था।

बंगाल में जमीन्दारों के साथ स्थायी बंदोबस्त 1790 के दशक में किया गया था। जनवरी 1844 में जेम्स थॉमसन इस प्रांत के गर्वनर बने और उन्होंने विधिवत रूप से ताल्लुकेदारों की प्रतिष्ठा, शक्ति और जमीन्दारी को समाप्त करने की नीति अपनाई। अवध में भी विलयन के बाद 1856–57 में जब संक्षिप्त बन्दोबस्त किया गया तो इसी प्रकार की नीति अपनाई गई। परंतु ताल्लुकदारों की प्रतिष्ठा को समाप्त करना इतना आसान नहीं था। कई स्थानों पर वे कुछ भूमि को बचा लेने में या सरकारी नीलामी के दौरान अपनी भूमि को पुनः

खरीदने में सफल हो जाते थे। लोगों की सहानुभूति उनके प्रति बनी रहती थी और ग्रामीण यह मानते थे कि वे सरकारी नीतियों के कारण कष्ट सह रहे थे क्योंकि किसानों को स्वयं नीतियों के कारण कष्ट सहने पर रहे थे। इसलिए उनका सहानुभूति बेदखल होने वाले हर व्यक्ति के साथ बनी रहती थी।

आर्थिक दृष्टि से भी यह उल्लेखनीय है कि सदियों से लगान इक्ट्ठा करने वाले जमीन्दार और जागीरदार केवल परजीवी नहीं थे। यह ठीक है कि पूँजीपति जमीन्दारों की भाँति लाभांश का भूमि में आय बढ़ाने के लिए निवेश नहीं करते थे परंतु वे यह जानते थे कि फसल अच्छी होने से उन्हें भी लाभ होगा इससे उनकी आय बढ़ती थी। उनके रहन–सहन और जीवन यापन के तरीके इस प्रकार के थे कि गांव के बहुत से लोग जीविका के लिए पूर्ण या आंशिक रूप से उन पर निर्भर थे। उनकी आय का वह भाग जो इस प्रकार गांवो में रह जाता था वह कम्पनी द्वारा जमीन्दारो की शाक्ति पर प्रहार का एक परिणाम यह हुआ कि भूमि का अतिरिक्त उत्पादन और इससे होने वाली आय का वह भाग जो इस प्रकार गाँवो में रह जाता था अब शहरों में और सरकारी खजानो में पहुँचने लगा पारंपरिक लगान व्यवस्था के स्थान पर औपनिवेशिक लगान संबंध स्थापित होने से गाँवो में बेरोजगारी तथा असुरक्षा की भावना बढ़ी। ग्रामीणों को ऐसा लगने लगा कि उनका संसार छिन्न–भिन्न हो रहा है। इस सबके लिए कम्पनी उत्तरदायी ठहराया गया।

1857 के विद्रोह को जन्म देने वाले कारणों में राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक और धार्मिक सभी कारण जिम्मेदार थे।

राजनीतिक कारणों में डलहौजी की व्यापक नीति और वेलेजली की सहायक संधि का विद्रोह को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। डलहौजी ने अपने व्यापगत निति द्वारा जैतपुर, सम्भलपुर, झांसी नागपुर आदि राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया। साथ ही अवध के नबावों को गद्दी से उतार दिया तथा भूतपूर्व पेशवा की पेंशन जब्त कर ली। यह सब कारण व्यापक असंतोष को फैलाने के लिए पर्याप्त था।

डलहौजी ने तंजोर और कर्नाटक के नवाबों को राजकीय उपाधियाँ जब्त कर ली। मुगल बादशाह को अपमानित करने के लिए उन्हें नजर देना सिक्को पर नाम खुदबाना आदि परंपरा को डलहौजी ने समाप्त कर दिया। साथ ही बादशाह को लाल किला छोड़कर कुतुबमीनार मे रहने का आदेश दिया। मुगल बादशाह चुंकि भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व करता था इसलिए उसके अपमान में जनता ने अपना अपमान महसूस किया और विद्रोह के लिए मजबूर हुए।

राजनीतिक कारणों के साथ ही प्रशासनिक राजनीतिक कारण भी विद्रोह के लिए जिम्मेदार थे। प्रशासनिक कार्यो में भारतीयों की भागीदारी जातीय श्रेष्ठता पर आधारित था। कोई भी भारतीय सुबेदार से उचे पद तक नहीं पहुँच पाता था, न्यायिक क्षेत्रों में अंग्रेजो को हर स्तर पर भारतीयो से श्रेष्ठ माना जाता था। कम्पनी की भू–राजस्व व्यवस्था ने अधिकांश अभिजात वर्ग को निर्धन बना दिया बम्बई में स्थापित इनाम कमीशन ने अपने सिफारिसों के आधार पर करीब 20,000 जागीरों को जब्त कर लिया।

स्थायी बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व्यवस्था और फिर महलवारी व्यवस्था द्वारा किसानों का जबरदस्त शोषण हुआ और वे निर्धनता के कुचक्र में फंस गये जिसके कारण इन्हें आर्थिक कठिनाईयों से गुजरना पड़ा। 1857 के विद्रोह के लिए जिम्मेदार सामाजिक और धार्मिक कारणों में अंग्रेजी प्रशासन के सुधारवादी उत्साह के अंतर्गत पारस्परिक भारतीय प्रणाली और संस्कृति संकटपूर्ण स्थिति में पहुँच गई जिसका रूढ़िवादी भारतीयों ने जमकर विरोध किया।

ईसाई धर्म के प्रचार के लिए पर्याप्त सुविधाएँ सरकार द्वारा प्रदान की गई। 1856 के धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम (Religions Disability) द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगो को अपनी पैतृक सम्पत्ति का हकदार माना गया साथ ही उन्हें नौकरियों में पदोन्नति, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई। अंग्रेजो को यह नीति भारतीयों को अन्ततः विद्रोह के लिए मानसिक रूप से तैयार कर दिया।

अर्थिक कारण भी 1857 के विद्रोह के लिए जिम्मेदार थे। भारत में अंग्रेजी सम्राज्य का सबसे बड़ा अभिशाप था देश का आर्थिक शोषण पलासी के युद्ध के बाद निरन्तर भारत का शोषण होता रहा जो शायद जन असन्तोष का सबसे महत्वपूर्ण कारण था। आर्थिक शोषण और उसके पारम्परिक आर्थिक ढ़ांचे का पूर्णतया विनाश किसानों, दस्तकारों और हस्तशिल्पकारो तथा बड़ी संख्या में परम्परागत जमीन्दारों को दरिद्र बना दिया। ब्रिटिश भू और राजस्व नीतियाँ, कानून और प्रशासनिक प्रणालियों में बड़ी संख्या में किसानों और जमीन्दारों की भूमि को उनके अधिकार से अलग कर दिया। जमीन्दारों और किसानों का उत्पीड़न तथा उनसे बड़ी मात्रा में धन की उगाही आदि ऐसे कारण थे जिन्होने असन्तोष को जन्म दिया, परिणामस्वरूप विद्रोह की भूमिका बनी, जिसके कारण लोगों को विद्रोह करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

1857 के विद्रोह के सैनिक कारणों में अनेक ऐसे कारण थे जिन्होंने इस विद्रोह पृष्ठभूमि तैयारी की। अंग्रेजी सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों में अधिकांश कनिष्ठ अफसर थे, उन्हें पदोन्नति का कोई फायदा नहीं दिया जाता था। पदोन्नति से वंचित, वेतन की न्यून मात्रा, भारत की सीमाओ से बाहर युद्ध के लिए भेजा जाना तथा समुद्र पार भत्ता न देना आदि ऐसे कारण थे जिन्होंने भारतीय सैनिकों में असन्तोष को जन्म दिया और वे विद्रोह के लिए विवश हुए।

चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग को 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण माना जाता है। ऐसे समय में जब अनेक कारणो में से जनता में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध क्रोध की ज्वाला पहले से भड़क रही थी, कैनिंग की दो घोषणाओं ने आग में घी का काम कर दिया। सेना में नये रंगरूटों के लिए समुद्रपार कर ब्रिटिश प्रदेशों में सेवा करना अनिवार्य कर दिया गया जिसे वे भारतीय सैनिक अपने धर्म विरूद्ध समझते थे। सैनिको को ऐसे कारतूस के प्रयोग के लिए विवश होना पड़ा जिसमें गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी। इसलिए ये सैनिक बहुत आक्रोश में आ गए और इसका विरोध करने के लिए विवश हुए।

कैंनिग सरकार ने 1857 के विद्रोह में सैनिको के प्रयोग के लिए ब्राउन बैस के स्थान पर एनफील्ड रायफल का प्रयोग शुरू करवाया जिसमें कारतूसो को लगाने से पूर्व दाँत से खींचना पड़ता था। चुँकि कारतुस में गाय और सुअर दोनो की चर्बी लगी थी इसलिए हिन्दू और मुस्लमान दोनो भड़क उठे परिणामस्वरूप 1857 के विद्रोह की शुरूआत हुई।

1857 के विद्रोह के कारणों में हम 100 वर्षो के कम्पनी राज्य की निरंकुश नीतियों में स्पष्ट देख रहे है। वेलेजली की सहायक संधियों से भारत में राजनीतिक असंतोष व्यापप्त था। रही सही कसर लार्ड डलहौजी और उसकी हड़प नीति ने पूरी कर दी।

''डलहौजी कोई भी ऐसी परिस्थिति को छोड़ना नहीं चाहता था जो कि उसे किसी राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का अवसर देता हो। डलहौजी ने अपनी हड़प नीति के तहत सतारा, झांसी, अवध, मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर का हुक्मनामा सुना दिया। इससे अधिकांश राज्य असंतुष्ट हो गये और विद्रोह कर दिया।

1750 ई0 के पश्चात् ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई तथा मैनचेस्टर एवं लिवरपूल आदि औद्योगिक शहरों में कपड़ा उद्योग स्थापित हुये। उस समय इग्लैण्ड का ऐसा कोई घर नहीं था जिसमें भारतीय कपड़ा न हो अब अपने कपड़ा उद्योग के उन्नति के लिए तीन नीतियाँ अपनाई। इग्लैण्ड में भारतीय कपड़ो को प्रतिबंधित किया गया एवं उसके आयात पर भारी कर लगाये गए। दूसरा भारत से अधिक से अधिक

कपास प्राप्त करने के लिए यहाँ के कृषको को कपास और नील की खेती हेतु बाध्य किया तीसरा ब्रिटेन का कपड़ा भारत में व्यापक रूप से बेचने का आधार तैयार किया। इससे एक तो भारतीय हथकरधा उद्योग नष्ट हुआ तथा इसमें संलग्न लोग बेकार हुये। कृषक अपनी परम्परागत फसल – गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, आदि के स्थान पर कपास की खेती करने को बाध्य हुये। कई कृषकों ने तो खेती करना ही छोड़ दिया। इस प्रकार भारतीय हस्तशिल्प एवं कृषि का विनाश भारत की एक ऐसी क्षति थी जिसे भारतीय भूला नहीं सकेगे। उपर से ब्रिटिश कम्पनी की भू–राजस्व नीतियों ने भी भारतीयों कृषको की कमर तोड़ दी। कई जमीन्दार और ताल्लुकदार भी इससे परेशान हुये और इन सबका आक्रोश 1857 की क्रांति में उभरकर सामने आया। जो 1857 के विद्रोह का कारण बना।

भारतीय सैनिक जो समुद्र पार जाने का मतलब धर्म भ्रष्ट हो जाना समझते थें उन्हें जबरन समुद्र पार जाने को मजबूर किया गया। दाढ़ी काटने के आदेश से मुस्लिक सैनिकों में असंतोष बहुत था। चमड़े की टोपी पहनने का कुलीन ब्राह्मण सैनिकों ने विरोध किया। उच्च पद पर केवल अंग्रेज सैनिको को ही मिलते थे। अंग्रेजो को भारतीय सैनिको से अधिक वेतन भी दिये जाते थे। ब्रिटिश सैनिक अधिकारी भारतीय सैनिकों के साथ दुर्व्यवहार करते थे। 1854 ई0 में डाक अधिनियम पारित हुआ। इसके तहत सैनिको की निःशुल्क डाक सुविधाएँ समाप्त कर दी गई। यही सब कारण था जो 1857 के इस विद्राह में देखा गया।

जाहिर सी बात है कि अफसरों द्वारा कर वसूलने के लिए जनता पर बेइंतहा जुल्म ढ़ाँए गए। उनसे भी बढ़ कर डंडे के बल पर पैसा वसूला गया जिसके पास खाने को कुछ भी नहीं था। एक कलक्टर ने कई बार सरकार को लिखा कि वह अपने इलाके से वसूली नहीं कर सकता क्योंकि वहॉ सिवाय घास के और कोई फसल नहीं हुई है। सरकार का निर्देश आया ''घास अच्छी चीज है, इसी को बिकवाकर टैक्स वसूलिए।''

सिर्फ गरीब किसान ही परेशान नहीं थे, सामंत भी अंग्रेजी हुकूमत से दुःखी थे। विद्रोह के मुख्य केन्द्र अवध में तालुकदारों के सारे अधिकार छीन लिए गए। लगभग 21 हजार तालुकादारों की जागीर छीन ली गई। इन तालुदारों के पास आय का कोई साधन नहीं बचा और काम कर नहीं कसते थे तथा भीख मांगने में शर्म आती थी। मजबूरन इन्होंने भी सिपाहियों के विद्रोह का समर्थन किया तथा स्वयं उसमें शामिल हो गए। इन्हें उम्मीद थी कि शायद फिर उन्हें उनकी जागीर मिल जाए। अंग्रेजी हुकूमत ने शिल्पकारों और दस्तकारों का भी दमन किया। ईस्ट इण्डिया कंपनी के राज ने उपेक्षा का रवैया अपनाया। जो थोड़ी बहुत छूट दी भी वह इसलिए कि भारतीय दस्तकार वही बनाए जो अंग्रेज चाहते थे।

दुनिया में अपनी कला के लिए मशहूर भारतीय दस्तकार और शिल्पकार भूखे मरने लगें। वे रोजगार तलासने लगे पर रोजगार था कहाँ क्योंकि जिस तेजी के साथ दस्कारी खत्म हुई उस तेजी के साथ औद्योगिक विकास नहीं हुआ।

दूसरी ओर एकाधिकारवादी अंग्रेजी शासन के इशारे पर अंग्रेजी अफसरों ने जिस तरह सामाजिक, धार्मिक परंपराओं, मान्यताओं पर कुठाराघात करना शुरू किया उससे परंपरावादी हिन्दुओं और मुसलमानों को बहुत आघात पहुँचा। उन्हें लगा कि सामाजिक परिवर्तन के नाम पर कानून बनाकर अंग्रेज हिन्दू–मुसलमानों के धर्म और संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं। उन्हें लगा कि ईसाई मिशनरी उन्हें अपने जाल में फंसाते जा रहे है। इसलिए हिन्दू और मुसलमान भी अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ हो गए और 1857 के विद्रोह के कारण बने।

1857 के विद्रोह के बहुत सारे कारण थे जिसके कारण यह विद्रोह असफल रहा। 1857 का विद्रोह अपने पूर्व के विद्रोहों से कहीं अधिक विस्तृत था। इस विद्रोह में सैनिक और असैनिक दोनों वर्गों ने हिस्सा लिया फिर भी यह विद्रोह असफल रहा। 1857 का विद्रोह समय से पूर्व विस्फोटित हो जाने के कारण अखिल भारतीय आन्दोलन का रूप धारण नहीं कर सका और भारत के कुछ ही भागों में सीमित रहा और देश के अधिकांश भागों में शान्ति बनी रही। बंगाल, पंजाब, कश्मीर, उड़ीसा तथा दक्षिण भारत में यह क्रान्ति फैल नहीं पाई थी अतः अपने सीमित स्वरूप के कारण भी यह असफल रही। 1857 के विद्रोह के संदर्भ में यह कहना कठिन है कि सभी विद्रोही राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर लड़ रहे थे। भारतीय सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों के कारण विद्रोह किया परंतु इन्हें अंतिम लक्ष्य का पता नही था। इसी तरह अन्य विद्रोहियों ने भी विद्रोह किया लेकिन इन विद्रोहियों में आपसी तालमेल या सहयोग नहीं था जो बाद में असफलता का कारण बना।

अंग्रेजों की तुलना में विद्रोहियों के साधन सीमित थे। जहाँ भारतीय सैनिक भाले एवं तलवार से युद्ध कर रहे थे वही अंग्रेज सैनिक नवीन राइफलों का प्रयोग कर रहे थे। बुन्देलखण्ड में नागपुर के राजा मदन सिंह ने यूरोपीय ढ़ंग पर तोप ढालने का कारखाना स्थापित किया जिसमें बनी हुई तोपें अंग्रेजों द्वारा प्रयोग की गई एवं सामुद्रिक मार्ग का लाभ उठाकर आवश्यकतानुसार सेना एक जगह से दूसरी जगह विद्रोहियों के दमन के लिए भेजी जाती थी।

इस 1857 के विद्रोह में शिक्षित भारतीयों ने न तो भाग लिया और न ही उसका समर्थन किया। यहाँ तक कि व्यापारियों एवं शिक्षित वर्ग ने कलकत्ता एवं बम्बई में अंग्रेजों की सफलता के लिए प्रार्थना की। 1857 के विद्रोहियों ने एक बहुत बड़ी भल की कि इन्होंने अपने आन्दोलन को राजाओ एवं जमीन्दारों का आन्दोलन बनाए रखा। अतः यह कभी जन साधारण का आन्दोलन नहीं बन सका।

1857 के विद्रोह के बहुत सारे कारण थे जिसने भारतीयों को यह दिखा दिया कि सिर्फ सेना और शक्ति के बल पर ही अंग्रेजों से मुक्ति नहीं मिल सकती है बल्कि सभी वर्गों का सहयोग, समर्थन और राष्ट्रीय भावना आवश्यक है। 1857 के विद्रोह से भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का बीजारोपन हुआ। इस विद्रोह ने उन्हें एकता और संगठन का पाठ पढ़ाया और राष्ट्रीय जीवन में यह उनकी प्रेरणा का स्रोत बना। विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश सरकार का ध्यान देश की आन्तरिक दशा को सुधारने की ओर उन्मुख हुआ। भारतीय इतिहास में यहीं से संवैधानिक विकास का सूत्रपात हुआ और धीरे–धीरे भारतीयों को अपने देश के विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर दिया जाने लगा।

संदर्भ सूचीः

1. राम लखन शुक्ल : आधुनिक भारत का इतिहासए हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2011, पृष्ठ 254–58
2. नागेन्द्र प्रताप सिंह : भारतीय इतिहास, शिव नगन, अल्लापुर, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ 180–181
3. डॉ0 एस0 के0 पाण्डे : आधुनिक भारत का इतिहास, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद, 2012, पृष्ठ 132–134
4. डॉ0 बी0 के0 श्रीवास्तव : भारतीय इतिहास की विषय–वस्तु, हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, 2013, पृष्ठ 218–221
5. डॉ0 दीनानाथ वर्मा : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, स्टूडेण्ट्स फ्रेण्डस, गोविन्द मित्रा रोड, पटना विश्वविद्यालय, 1986, पृष्ठ 21–24
6. विश्वनाथ तिवारी : भारतीय इतिहास, भारती भवन (पाब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), गर्दनीबाग, पटना, 2002, पृष्ठ 165–70

7. के० श्रीवास्तव अगरवाल : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, आगरा, 2005, पृष्ठ 13–14
8. विलास शर्मा : स्वधीनता आन्दोलन के बदलते परिपेक्ष्य।
9. बी० डी० सावरक : द इण्डियन वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स ।
10. जे० डब्लयु० के० ए० : हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वार इन इण्डिया।
11. सुधीर विद्यार्थी : मौवली अहमदुल्लाशाह ।
12. रमेश चन्द्र मजूमदार : सिप्वाय म्यूटिनी एण्ड द रिवोल्ट ऑफ 1857।
13. सारवाराम गणेश देउस्कर : देश की बात।
14. विलियम फौरबेस मिचेल : रेमिनिसेंसेज ऑफ द ग्रेट म्युटिनी।
15. डॉ० विपिन चन्द्र : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, दिल्ली यूनिर्वसिटी, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 1–10